चुनावी बिगुल : लाठीतंत्र के आगे जनतंत्र की क्या बिसात

मनोज कुमार झा

देश में लोकसभा चुनाव के लिए बिगुल बज गया है। 7 अप्रल से 12 मई तक चुनाव संपन्न होंगे और 16 मई को नतीजे आ जाएंगे। नतीजे क्या होंगे, इसका अनुमान कमोबेश सबों का है, पर इस चुनाव के साथ खास बात यह है कि कुर्सी के लिये होने वाली कुत्ता-लड़ाई में जनतंत्र पूरी तरह से नंगा हो गया है। नेताओं ने नकाब उतार देना ही ठीक समझा है। संसद में जूतमपैजार करने से लेकर सड़क पर गुत्थम-गुत्था हो जाना नेताओं-मन्त्रियों के लिए बड़ी बात नहीं है। चुनाव की घोषणा के साथ ही कुछ ऐसे राजनीतिक घटनाक्रम सामने आए हैं, जिनसे साफ़ जाहिर है कि जनतंत्र के इस सबसे बड़े पर्व, चुनाव में लाठीतंत्र हावी रहेगा। लाठी का जोर अभी से दिखाई पड़ रहा है। देश में चुनाव के दौरान क्या-क्या नहीं होता है, यह बहुतों को पता है। कई साल पहले सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने लिखा था-'है लाठियों में तेल मल के आ रहा चुनाव'

लट्ठतंत्र भारतीय गणतंत्र और चुनावों से अभिन्न है। रहेगा भी। इसे चुनौती दे पाना नामुमकिन है। जनता पर बेरहमी से लाठियां-गोलियां बरसवाने वाले सत्तानशीं नेता अब आपस में ही खुलकर गुत्थमगुत्था हो रहे हैं और एक-दूसरे को खुलेआम गालियां दे रहे हैं। जनता इन्हें चोर, लुटेरा, डाकू, हत्यारा, बलात्कारी, भ्रष्ट क्या कहेगी, ये एक दूसरे को इन्हीं उपाधियों से विभूषित कर रहे हैं। चुनाव प्रचार ने पहले से भोंडा और अधिक हास्यास्पद रूप ले लिया है। मतदाताओं को रिझाने के लिए हर हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। बॉलीवुड अभिनेत्रियों के नाच से लेकर हर किस्म की भड़ैती और टीवी, मीडिया-सोशल मीडिया पर गंभीर चर्चा से लेकर नमो चाय चर्चा और राहूल दूध के हास्यास्पद प्रयोगों तक, जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए हर काम करेगा-

वो 'हरम' में पड़ा 'रंगीलेशाह'
'जनतंत्र' में नाच भी दिखाता है।
रोज़ डाका डालते जिसके फ़र्माबरदार
पार्लमेंट में वो फ़लसफ़ा झाड़ता है।
मौत के सौदागरों को मिली क्लीन चिट
गुंडा मंत्री बना और गुर्राता है।

जाहिर है, जनतंत्र के नाम पर चल रहे इस लूटतंत्र को अब किसी आड़ की जरूरत नहीं रही। नंगई में कोई किसी से पीछे रहने को तैयार नहीं है। ताल ठोक कर और बाहें चढ़ा कर सम्मानित लीडरान एक-दूसरे की तरफ़ बढ़ रहे हैं और हिंसक गतिविधियां कर रहे हैं। किसी भी कीमत पर सत्ता में बने रहने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। एक तरफ रामविलास पासवान और भाजपा का अपवित्र गठबंधन हो रहा है तो दूसरी तरफ़ अन्ना जैसे 'महान समाज सुधारक' ममता बनर्जी को प्रधानमंत्री बनवाने के लिये शहर-शहर जाकर प्रवचन दे रहे हैं, भले ही चंद जागरूक लोग उनका मजाक उड़ाते हों। ये अभी कांग्रेस, भाजपा आम आदमी पार्टी आदि राजनीतिक दलों का विरोध कर रहे हैं, वहीं थाली के बैंगन वाली दशा प्राप्त होने के कारण कब क्या कर बैठें, कुछ नहीं कहा जा सकता। उनमें आस्था रखने वाली किरण बेदी जो भारत की पहली महिला आईपीएस होने के कारण एक अनमोल 'धरोहर' मानी जाती हैं, खुलकर मोदी के साथ आ गई हैं। अरविंद केजरीवाल और उनकी 'आप' के प्रति अन्ना व बेदी का तिरस्कार भाव जगजाहिर है, वहीं भाजपा-कांग्रेस के प्रति इनका अनुराग भी छिपा नहीं है। बहरहाल, जनतंत्र के इस महापर्व के मौके पर ये जनता-जनार्दन के समक्ष कुछ तमाशे पेश करेंगे, भले ही इनकी अहमियत एक विदूषक भर से ज़्यादा नहीं रह गई हो।

सोनिया-राहुल के नेतृत्व वाली कांग्रेस वंशवाद और देश के लिए एक परिवार के बलिदान के नाम पर वोट मांग रही है, वहीं भाजपा और उसके प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी कांग्रेस मुक्त भारत बनाने के लिये वोट मांग रहे हैं। राहुल बाबा नाटकीय अंदाज में चीख-चीख कर जब देश के लिए अपनी दादी और अपने पिता के बलिदान की बात कर लोगों की

दिल्ली में 'आप' ने एक नये विकल्प का मॉडल पेश किया था, पर वर्तमान ढांचे में ऐसी पार्टी के लिए काम करना बेहद मुश्किल है। वर्तमान ढांचा चोर-डाकुओं और भ्रष्टाचारियों के लिए ही मुफ़ीद है। 'आप' के पास लाठी का बल भी नहीं है जो राजनीतिक दलों के पास होना आवश्यक माना गया है। लाठी बल यानी गुंडा बल। आज यह बल सभी दलों के पास है।

सहानुभूति बटोरना चाहते हैं, वहीं यह बात जरा भी ध्यान नहीं रखते कि इस देश की गरीब जनता कितने बलिदान देती रही है और हुक्मरान चाहे अंग्रेज रहे हों, कांग्रेसी रहे हों या भाजपाई, उनके हितों के लिए ख़ुद बली चढ़ती रही है। उस ग़रीब जनता के मुंह से निवाला छीनने की कोशिश हर दल की सरकारों ने की है, चाहे वो दक्षिणपंथी भाजपाई रहे हों या वामपंथी माकपाई।

सवाल ये है कि अब क्या होगा? वामपंथियों के कुशासन और गुंडाराज से बदहाल पश्चिम बंगाल की आम जनता को तृणमूल नेत्री ममता बनर्जी के शासन में भी राहत नहीं मिली। तृणमूल गुंडों का कहर बरपता ही रहा। उत्तर प्रदेश में मुलायम के गुंडाराज की जगह अखिलेश का महागुंडाराज चलने लगा। जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। बिहार में जहा लालू के कुशासन का अंत हुआ, वहीं नीतीश भी दो टर्म चुनाव जीतने के बावजूद जनता को राहत दे पाने में विफल रहे। साथ ही, उन्होंने राजद के माफ़िया तत्वों से भी हाथ मिलाया, जबकि अपने माफ़िया सहयोगी ही कम नहीं थे। बिहार के ही भ्रष्ट और अवसरवादी नेताओं में एक रामविलास पासवान के भाजपा से हाथ मिला लेने के कारण लालू जैसे नेता सिर्फ कांग्रेस से चिपक कर रहने को मजबूर हो गए हैं। कांग्रेस एक डूबता जहाज है। इस बार घाट पार लग पाना संभव नहीं है।

कांग्रेस नेतृत्व इस बात को भली-भांति समझ चुका है। राहुल गांधी पराजित मानसिकता के साथ चुनाव मैदान में हैं। कई कांग्रेसी नेता सरसाम की हालत में पहुंच गए हैं। कई सुरक्षित ठिकाने की तलाश में हैं। दिल्ली की तीन टर्म मुख्यमंत्री रह चुकी शीला दीक्षित 'आप' से बुरी तरह पराजित होने के बाद फ़िर से जनता की गाढ़ी कमाई पर मौज़ उड़ाने के लिए केरल की गवर्नर बनाई जा चुकी हैं। कांग्रेसी नेताओं की छवि जनता के बीच किस हद तक गिर चुकी है, इसका पता इस बात से चलता है कि हरियाणा के सीएम भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को जूते तक जड़ दिए गए।

इस चुनाव में जीत को लेकर अटकलें तो खूब लगाई जा रही हैं, पर हार के बारे में सभी एकमत हैं और वो यह कि कांग्रेस का सूपड़ा साफ़ होकर रहेगा, पर यह भी तय है कि जनादेश किसी एक दल अथवा गठबंधन को नहीं मिलेगा। भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी का विरोध दबे-छुपे रूप में पार्टी के अंदर भी हो रहा है। लालकृष्ण आडवाणी के तेवर साफ़ दिखाई पड़ रहे हैं। भाजपा गठबंधन भी अभी कोई आकार नहीं ले पा रहा है। यह अलग बात है कि इस पार्टी के पीछे संघ की लट्ठ ताकत साफ़ दिखाई पड़ रही है। संघ ने अपने स्वयं सेवकों को और कुछ नहीं तो घृणा का प्रचार करना और लाठी भांजना अच्छी तरह सिखाया है।

इधर, गुंडा ताकतों के सिरमौर मुलायम सिंह भी लाठियों को तेल पिलाने में लगे हुए हैं। ये थर्ड फ्रंट खड़ा करने में लगे हैं। राजनीति में लगभग अप्रासंगिक से हो चुके वामपंथी इनके साथ हैं। वहीं, नीतीश कुमार और शरद यादव जैसे सेक्युलरिज़्म के तथाकथित झंडाबरदार जो वस्तुत: जातिवादी और अल्पसंख्यकवादी हैं, थर्ड फ्रंट में संभावनाओं की तलाश कर रहे हैं। वैसे, इस बार मायावती मुलायम के लिये चुनौती साबित हो सकती हैं। मायावती और ममता पक्की अवसरवादी हैं। एक और हैं जयललिता। कहा जा रहा है कि इस बार 'किंग मेकर' के रूप में इनकी अच्छी-खासी भूमिका हो सकती है। ममता और जयललिता पर नरेन्द्र मोदी ने डोरे डाले हैं। देखना है, दोनों चिरकुमारियां मोदी का संबल बनती है या नहीं? एक और चिरकुमारी मायावती को सूबे की सत्ता मिले तो केन्द्र में मोदी का समर्थन कर सकती हैं। पहले भी भाजपा के साथ साझे में यूपी सरकार चला चुकी हैं। जहां तक ममता का सवाल है, कहा जा रहा है कि उनकी निगाह भी प्रधानमंत्री की कुर्सी पर है।

वैसे, इन सभी की राह में रोड़ा बनकर खड़ी हो गई है आम आदमी पार्टी। 'आप' का उभार जनउभार का रूप ले सकता है। युवाओं और भ्रष्टतंत्र से आजिज आ चुके लोगों में 'आप' लोकप्रिय हो रहा है। लोगों को लग रहा है कि यह एक विकल्प है, पर राष्ट्रीय फ़लक पर इसका कोई सांगठनिक ढांचा नहीं उभर पाने और नेतृत्व गिने-चुने लोगों तक सीमित होने के कारण यह कह पाना मुश्किल है कि इसे किस हद तक सफलता मिल पाएगी। वैसे, यह बात तय है कि आम आदमी पार्टी भाजपा और मोदी के लिये बहुत बड़ी बाधा बन कर खड़ी हो चुकी है।

दिल्ली में 'आप' ने एक नये विकल्प का मॉडल पेश किया था, पर वर्तमान ढांचे में ऐसी पार्टी के लिए काम करना बेहद मुश्किल है। वर्तमान ढांचा चोर-डाकुओं और भ्रष्टाचारियों के लिए ही मुफ़ीद है। 'आप' के पास लाठी का बल भी नहीं है जो राजनीतिक दलों के पास होना आवश्यक माना गया है। लाठी बल यानी गुंडा बल। आज यह बल सभी दलों के पास है। सौम्य मानी जाने वाली ममता दीदी ने जब पश्चिम बंगाल में इस बल का प्रयोग किया तो उनके विरोधियों में हाहाकार मच गया था। उनके विरोधी माकपाइयों के पास यह बल था ही, कांग्रेसियों-भाजपाइयों के पास शुरू से रहा है। चुनावों में यह बहुत काम आता है। चुनाव की तैयारी लाठियों को तेल पिलाने और उन्हें भांजने से शुरू होती है।

तुर्की-ब-तुर्की

दो तरह के नेता

राहुल गांधी

''दो तरह के नेता होते हैं। एक गांधी जी जैसे जो जनता को ताकत देने में विश्वास करते हैं। दूसरे हिटलर जैसे जो सब कुछ अपनी ताकत से करने का दावा करते हैं।''

हमारा कहना है-

- जाहिर है, पहले तरह के यानी गांधीजी जैसै नेता की श्रेणी में आप स्वयं को रख रहे हैं, राहुल गांधी। दूसरे तरह के नेता से आपका अभिप्राय नरेन्द्र मोदी से है। मतलब यह कि कांग्रेसी सरकार द्वारा बनाये तमाम सामाजिक एवं आर्थिक कानून तरह-तरह की शक्तियां आम लोगों के हाथ में देते हैं। मसलन-पंचायती राज, आर टी आई, आर टी ई, मनरेगा, शहरी रोज़गार योजना, ग्रामीण एवं शहरी रोज़गार योजनायें, लोकपाल, आर टी एस एक्ट जुडिशियल एकाऊंटिबिलिटी बिल, महिला आरक्षण बिल इत्यादि। जबकि नरेन्द्र मोदी का एक ही तर्क होता है कि बस सत्ता उसके हाथ में देकर उसे ही सशक्त कर दो और तब वह सभी के लिये धरती पर स्वर्ग ला देगा।
- राहुल गांधी, आपके वक्तव्य में थोड़ी सी कमी रह गयी है गांधी और हिटलर जैसे दो तरह के नेता होते हैं, यह कहना तो आज के भारत में सही नहीं लगता। दरअसल, यह कहना ज़्यादा सही होगा कि ऐसे दो तरह के नेता होते थे। अब नहीं होते हैं। गांधी जैसे नेता आज की राजनीतिक पार्टियों में बन नहीं सकते। और हिटलर जैसे नेता भारतीय जनता बनने नहीं देगी।
- ऊपर जो आम आदमी को तथाकथित रूप से सशक्त करने वाले कानून गिनाये गये हैं, वे सभी शासकों के नजरिये से बनाये गये कानून हैं। लिहाज़ा इनका निर्वाह भ्रष्टाचार में लिप्त सरकारी मशीनरी द्वारा अपने हित में किया जाता है न कि जनता के हित में। आप जैसे राजनीतिक जीव गांधी के नाम की लफ़्फ़ाजी महज़ अपने लिये विश्वसनीयता हासिल करने के उद्देश्य से करते हैं। आप जैसों को गांधी की याद हर वर्ष 2 अक्टूबर और 30 जनवरी के अलावा केवल चुनावी दौर में ही आती है। इस लिहाज़ से इस देश के तमाम राजनीतिक नेता एक समान तीसरी श्रेणी में आते हैं। चुनावी राजनीति में उतरे नये खिलाड़ी 'आप' का परीक्षण भी एक-दो चुनावों में हो जायेगा।
- रही बात नेताओं के हिटलर बनने की, तो राहुल गांधी जी याद कीजिये कि इस देश की जनता ने आपकी दादी इन्दिरा गांधी द्वारा थोपे आपातकाल की हिटलरशाही का क्या हश्र किया था।
- नरेन्द्र मोदी को भी अगर कोई मुगालता है तो वह भी इस देश की जनता चलने नहीं देगी। मोदी बेशक आडवाणी की छुट्टी करदे, सारी भाजपा को अपने सामने झुका ले, प्रधानमंत्री बनकर अपने विरोधियों की ऐसी-तैसी करले, पर जिस दिन उसने देश के आम आदमी को पददलित किया, उसकी भी ढपली बजने में देर नहीं लगेगी।
- सच्चाई यह है कि राहुल गांधी व नरेन्द्र मोदी एक ही श्रेणी के नेता हैं- पूंजीपतियों से यारी निभाते हुए और जनता को उल्लू बनाते हुए सत्ता की मलाई खाने वाले।